

11-समस्याएँ आज की समाधान कल के

अध्याय 1: प्रगति से पहले अवगति की रोकथाम

इस अध्याय में लेखक ने वर्तमान समय की समस्याओं, जैसे प्रकृति का विनाश, जनसंख्या वृद्धि, और फिजूलखर्ची पर ध्यान केंद्रित किया है। लेखक का तर्क है कि इन समस्याओं का मूल कारण मनुष्य का भटकाव और गलत आचरण है। समाधान के रूप में वे नारी शक्ति का समुचित उपयोग, प्रजनन पर रोक, और 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सिद्धांत को अपनाने का सुझाव देते हैं।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार लोकमानस पर कौन से दो उन्माद चढ़े हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, लोकमानस पर वैज्ञानिक उपलब्धियों और तात्कालिक या प्रत्यक्ष को ही सब कुछ मान लेने का दुहरा उन्माद चढ़ा है।

2. प्रश्न: प्रकृति के साथ क्रूर मजाक करने का क्या परिणाम भुगतना पड़ेगा? नमस्ते। आपके द्वारा प्रदान किए गए स्रोतों के आधार पर, यहाँ प्रत्येक अध्याय से विभिन्न स्तरों के प्रश्न और उनके उत्तर दिए गए हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पुस्तक में दिए गए कुछ आँकड़े 1988-90 के समय के हैं और उन्हें वर्तमान संदर्भ में संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है।

अध्याय 1: प्रगति से पहले अवगति की रोकथाम

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आजकल लोगों पर कौन से दो उन्माद चढ़े हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आजकल लोगों पर वैज्ञानिक उपलब्धियों का और प्रत्यक्ष को ही सब कुछ मान लेने का दुहरा उन्माद चढ़ा है।

2. प्रश्न: प्रकृति के साथ क्रूर व्यवहार करने का क्या परिणाम होता है?

उत्तर: प्रकृति के साथ क्रूर व्यवहार करने पर उसका प्रतिफल भुगतना ही पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे आग में हाथ डालने पर हाथ झुलस जाता है।

3. प्रश्न: देश की प्रगति में महिलाओं का योगदान कैसे बढ़ाया जा सकता है?

उत्तर: यदि महिलाओं को दी गई ईश्वर की क्षमता को समुन्नत और सुव्यवस्थित किया जाए, तो देश की प्रगति में उनका योगदान लगभग आधा हो सकता है, जिससे देश का कौशल, उत्पादन और पुरुषार्थ लगभग दोगुना हो सकता है।

4. प्रश्न: दो हजार वर्ष पहले संसार की आबादी कितनी थी और अब कितनी हो गई है?

उत्तर: दो हजार वर्ष पहले संसार की आबादी लगभग तीस करोड़ थी, जो अब (पुस्तक लिखे जाने के समय)

बढ़कर छह सौ करोड़ हो गई है, यानी बीस गुना अधिक।

5. प्रश्न: 'सादा जीवन—उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाने से क्या लाभ होगा?

उत्तर: 'सादा जीवन—उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाने से फिजूलखर्ची कम होगी और दुखदाई दरिद्रता से आधा छुटकारा मिल सकता है।

6. प्रश्न: कौन-कौन सी चीजें समाज की आर्थिक कमर तोड़ रही हैं?

उत्तर: धूमधाम वाली, दहेज और जेवर की भरमार वाली खर्चीली शादियाँ समाज की आर्थिक कमर तोड़ रही हैं।

7. प्रश्न: लेखक के अनुसार समानता किसका लक्षण है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, समानता प्रकारांतर से शालीनता का ही एक लक्षण है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक ने वर्तमान संकटों का मूल कारण किसे माना है और उसका समाधान क्या बताया है?

उत्तर: लेखक ने वर्तमान संकटों का मूल कारण मनुष्य का अपना भटकाव और अनर्थ-आचरण (उलटी चाल) माना है। समाधान के लिए उन्होंने अपनी रीति-नीति और भूलों को सुधारने पर जोर दिया है, क्योंकि गलती करने वाले पर ही उसे सुधारने का दायित्व भी होता है।

2. प्रश्न: अनावश्यक प्रजनन को एक बड़ी समस्या क्यों कहा गया है? इसे रोकने से क्या लाभ हो सकता है?

उत्तर: अनावश्यक प्रजनन को एक बड़ी समस्या इसलिए कहा गया है क्योंकि इससे जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जिससे संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा है। यदि कामुकता की दुष्प्रवृत्ति को रोककर प्रजनन पर नियंत्रण कर लिया जाए, तो यह डूबते हुए समाज के लिए तिनके के सहारे जैसा होगा और इससे कई संकटों से सहज छुटकारा मिल सकता है।

3. प्रश्न: अमीर और गरीब के बीच की खाई को कैसे कम किया जा सकता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यदि अमीर लोग अमीरी जताने के अहंकार और धन-कुबेर बनने की हवस को काबू में रखें और औसत नागरिक स्तर का जीवन अपनाएं, तो इससे बची हुई संपत्ति और समय से पिछड़े हुए लोगों का उत्थान किया जा सकता है, जिससे यह खाई कम हो सकती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: लेखक ने कौटुम्बिक उत्तराधिकार के औचित्य पर क्या प्रश्न उठाया है और न्यायपूर्ण व्यवस्था किसे माना है?

उत्तर: लेखक का मानना है कि कौटुम्बिक उत्तराधिकार का औचित्य केवल असमर्थों के निर्वाह तक ही सीमित होना चाहिए। वे इस बात पर प्रश्न उठाते हैं कि कमाऊ उत्तराधिकारियों पर पूर्वजों की कमाई लादने का क्या

औचित्य है। उनके अनुसार, न्याय यह कहता है कि धन भले ही किसी ने जमा किया हो, उसका उपयोग वहाँ होना चाहिए जहाँ उसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

2. प्रश्न: "प्रगति से पहले अवगति की रोकथाम" शीर्षक का क्या तात्पर्य है? लेखक किस प्रकार की 'अवगति' को रोकने की बात कर रहे हैं?

उत्तर: इस शीर्षक का तात्पर्य है कि आगे बढ़ने (प्रगति) से पहले, हमें उस गिरावट (अवगति) को रोकना होगा जो हमारे समाज में आ चुकी है। लेखक नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय गिरावट की बात कर रहे हैं, जैसे - प्रकृति का शोषण, जनसंख्या विस्फोट, फिजूलखर्ची और सामाजिक असमानता। उनका मानना है कि जब तक इस गिरावट को रोका नहीं जाएगा, तब तक सच्ची प्रगति संभव नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे किसी टूटी-फूटी चीज की मरम्मत किए बिना उसे आगे इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

अध्याय 2: शिक्षा ही नहीं, विद्या भी

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, स्कूल-कॉलेजों की शिक्षा की क्या सीमा है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, स्कूल-कॉलेजों की शिक्षा मुख्यतः लिखा-पढ़ी और हिसाब-किताब तक सीमित है और इसमें कई ऐसे विषय पढ़ाए जाते हैं जो व्यावहारिक जीवन में काम नहीं आते।

2. प्रश्न: विद्या को किसकी उपमा दी गई है?

उत्तर: विद्या को 'ज्ञान चक्षु' (ज्ञान की आँख) की उपमा दी गई है, जिसके अभाव में मनुष्य को अंधों के समान माना जाता है।

3. प्रश्न: शिक्षा कब खतरनाक हो सकती है?

उत्तर: यदि शिक्षा मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव और व्यक्तित्व का विकास न करे, तो भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण के कारण मनुष्य और भी खतरनाक हो सकता है, जिसे 'ब्रह्म-राक्षस' की संज्ञा दी गई है।

4. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य को 'नरपशु' या 'वनमानुष' कब कहा है?

उत्तर: जब मनुष्य आत्म-विस्मृति के कारण अपनी मानवीय गरिमा को भूल जाता है और असभ्य व्यवहार करता है, तब उसे 'नरपशु' या 'वनमानुष' कहा जा सकता है।

5. प्रश्न: विद्या और शिक्षा में क्या मुख्य अंतर है?

उत्तर: शिक्षा का संबंध मुख्यतः लोक व्यवहार और उपार्जन (धन कमाना) से है, जबकि विद्या का संबंध व्यक्तित्व के विकास, प्रतिभा को जगाने और दृष्टिकोण को उत्कृष्ट बनाने से है।

6. प्रश्न: कहानी में राजकुमारी और नौकरानी कौन थीं?

उत्तर: कहानी में राजकुमारी 'विद्या' थी और नौकरानी 'शिक्षा' थी।

7. प्रश्न: प्राचीनकाल में शिक्षा का क्या उद्देश्य था?

उत्तर: प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य निर्वाह के साधनों को जुटाना और उनका सही प्रयोग सिखाना था।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: "शिक्षित बेकार" अशिक्षितों की तुलना में अधिक गंभीर समस्या क्यों बन जाते हैं?

उत्तर: "शिक्षित बेकार" अधिक गंभीर समस्या इसलिए बन जाते हैं क्योंकि वे शारीरिक श्रम के काम करने में अपनी बेइज्जती समझते हैं और उनकी आदत भी छूट जाती है। नौकरी न मिलने की स्थिति में वे अपने और दूसरों के लिए बोझ बन जाते हैं, जबकि अशिक्षित व्यक्ति किसी भी तरह का काम करके अपनी आजीविका चला लेता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों मानते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बदलाव की तत्काल आवश्यकता है?

उत्तर: लेखक मानते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्यक्तित्व को निखारने, व्यावहारिक सभ्यता सिखाने और प्रतिभा को प्रखर बनाने में असफल रही है। इसके बिना व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का समुन्नत विकास संभव नहीं है। मानवीय गरिमा के गुणों के बिना केवल किताबी ज्ञान व्यक्ति को अहंकारी और समाज के लिए अहितकर बना सकता है।

3. प्रश्न: आज के भौतिकवादी युग में विद्या की उपेक्षा क्यों हो रही है?

उत्तर: आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य खुद को केवल शरीर मानता है और उसकी सभी इच्छाएँ-आकांक्षाएँ शरीर तक ही सीमित रहती हैं। शिक्षा को भी केवल उपार्जन और सुविधाएँ जुटाने का माध्यम मान लिया गया है। आत्मा, सज्जनता और शालीनता जैसे विद्या से जुड़े पक्षों को उपेक्षित कर दिया गया है, क्योंकि उनकी महत्ता और आवश्यकता को ही नहीं समझा जा रहा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, विद्या को पुनः स्थापित करने के लिए किस प्रकार की व्यापक योजना की आवश्यकता है?

उत्तर: लेखक का मानना है कि विद्या को पुनः स्थापित करने के लिए एक सांगोपांग (संपूर्ण) रूपरेखा बनानी होगी और उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए एक बहुत बड़ी और व्यापक योजना बनानी पड़ेगी। इसके लिए विचारशील और भाव-सम्पन्न लोगों को अपना समय, श्रम, और पुरुषार्थ ठीक उसी तरह लगाना होगा, जैसे सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में शिक्षा के लिए संसाधन जुटाए जाते हैं।

2. प्रश्न: विद्या और शिक्षा की कहानी के माध्यम से लेखक वर्तमान समाज की किस सबसे बड़ी भूल की ओर इशारा कर रहे हैं?

उत्तर: इस कहानी के माध्यम से लेखक इस सबसे बड़ी भूल की ओर इशारा कर रहे हैं कि समाज ने विद्या (नैतिक और चारित्रिक विकास) को त्याग कर केवल शिक्षा (आजीविका कमाने का ज्ञान) को अपना लिया है। जैसे नौकरानी ने राजकुमारी के कपड़े पहनकर उसका स्थान ले लिया, वैसे ही शिक्षा ने विद्या का स्थान ले लिया है। इसी मूलभूत भूल के कारण यह सुंदर संसार दीन-हीन और अपराधी प्रवृत्ति का बन गया है और विनाश के कगार पर खड़ा है।

अध्याय 3: तथ्यों को समझें, दृश्यों में न उलझें

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: मनुष्य को सृष्टि का सर्व समर्थ प्राणी क्यों कहा गया है?

उत्तर: मनुष्य को सृष्टि का सर्व समर्थ प्राणी इसलिए कहा गया है क्योंकि उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ बहुत समर्थ हैं और उसका दृश्य और अदृश्य, दोनों लोकों पर असाधारण अधिकार है।

2. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य को "भटका हुआ देवता" क्यों कहा है?

उत्तर: मनुष्य को "भटका हुआ देवता" इसलिए कहा है क्योंकि उसके भीतर दैवी शक्तियों का निवास है, लेकिन वह सांसारिक जाल-जंजाल में फंसकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल गया है।

3. प्रश्न: मनुष्य की सबसे बड़ी गड़बड़ी या भूल क्या है?

उत्तर: मनुष्य की सबसे बड़ी गड़बड़ी यह है कि वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर खुद को केवल शरीर मात्र समझता है।

4. प्रश्न: परमाणु और मनुष्य की शक्ति में क्या समानता बताई गई है?

उत्तर: जैसे एक छोटे से परमाणु में पूरे ग्रह जितनी शक्ति होती है, वैसे ही एक औसत मनुष्य के शरीर में भी पूरे ब्रह्मांड जितनी शक्ति समाहित हो सकती है।

5. प्रश्न: मनुष्य 'नर से नारायण' या 'पुरुष से पुरुषोत्तम' कब बन सकता है?

उत्तर: जब मनुष्य आत्म-बोध प्राप्त कर लेता है और यह समझ लेता है कि 'मैं कौन हूँ, क्या हूँ, और क्या कर सकता हूँ', तब वह 'नर से नारायण' बन सकता है।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार स्वर्ग और नरक क्या हैं?

उत्तर: स्वर्ग और नरक केवल अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपने लिए बनाता और बदलता रहता है।

7. प्रश्न: उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

उत्तर: उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए सबसे महत्वपूर्ण है "दृष्टिकोण का परिवर्तन"।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: "हर व्यक्ति का अपना संसार अलग से रचा हुआ है", इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इस कथन का आशय है कि हमारा दृष्टिकोण ही हमारे लिए संसार का निर्माण करता है। जैसे रंगीन चश्मा लगाने पर सब कुछ उसी रंग का दिखता है, वैसे ही हमारे अपने दृष्टिकोण, चिंतन और मानसिकता के अनुरूप ही हमें सारा वातावरण और परिस्थितियाँ दिखाई देती हैं। इसलिए, बाहरी दुनिया एक होते हुए भी हर व्यक्ति उसे अपनी आंतरिक स्थिति के अनुसार अलग-अलग अनुभव करता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि समस्याओं के समाधान के लिए पदार्थों या घटनाओं में उलझना व्यर्थ है?

उत्तर: लेखक कहते हैं कि पदार्थ और घटनाएँ तो जड़ हैं; वे स्वयं में अच्छे या बुरे नहीं होते। असली नियंत्रण मनुष्य की सचेतन सत्ता के हाथ में है। जैसे शतरंज की बाजी गोटियों पर नहीं, खिलाड़ी की मानसिकता पर निर्भर करती है, उसी प्रकार समस्याओं का वास्तविक हल बाहरी परिस्थितियों को बदलने में नहीं, बल्कि मनुष्य की मानसिकता और दृष्टिकोण को बदलने में है।

3. प्रश्न: लेखक ने "मुरझाए पत्ते सींचने" और "जड़ तक खाद-पानी पहुँचाने" का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि सतही उपाय करने से स्थायी समाधान नहीं मिलता। "मुरझाए पत्ते सींचना" सतही समस्याओं (जैसे गरीबी, अपराध) से निपटने के बाहरी प्रयासों की तरह है। जबकि "जड़ तक खाद-पानी पहुँचाना" समस्या के मूल कारण, यानी मनुष्य के सामूहिक चिंतन और दृष्टिकोण को बदलने जैसा है। उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए हमें मूल कारण पर काम करना होगा, न कि केवल लक्षणों पर।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: "मनुष्य न केवल अपने भाग्य का निर्माता आप है, वरन् उसी का सामूहिक चिन्तन, क्रियाकलाप, प्रवाह वैसा ही कुछ बनाकर खड़ा कर देता है, जैसा कि सोचा या चाहा गया था।" इस कथन की विस्तार से व्याख्या करें।

उत्तर: इस कथन का गहरा अर्थ है कि व्यक्ति का भाग्य उसके अपने दृष्टिकोण और कर्मों से बनता है। लेकिन जब बहुत से लोग एक ही तरह से सोचने और काम करने लगते हैं, तो यह एक "सामूहिक चिंतन" या "प्रवाह" बन जाता है। यही सामूहिक चेतना समाज और युग का निर्माण करती है। सतयुग और कलियुग जैसे युगों का अंतर लोगों के शरीर या निर्वाह साधनों में नहीं, बल्कि उनके सामूहिक दृष्टिकोण और मानसिकता में होता है। अतः, यदि हमें समाज या युग को बदलना है, तो हमें व्यक्तिगत स्तर पर शुरुआत करके एक सकारात्मक सामूहिक चेतना का निर्माण करना होगा।

2. प्रश्न: अध्याय के शीर्षक "तथ्यों को समझें, दृश्यों में न उलझें" का सार क्या है? यहाँ 'तथ्य' और 'दृश्य' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: इस शीर्षक का सार यह है कि हमें बाहरी घटनाओं और परिस्थितियों (दृश्य) में उलझने के बजाय उनके पीछे छिपे मूल कारणों (तथ्यों) को समझना चाहिए।

◦ 'दृश्य' से अभिप्राय है वे बाहरी समस्याएँ और परिस्थितियाँ जो हमें दिखाई देती हैं, जैसे- गरीबी, अपराध, संघर्ष, बीमारियाँ। ये शतरंज की गोटियों की तरह हैं।

◦ 'तथ्य' से अभिप्राय है वह मूल कारण जो इन दृश्यों को उत्पन्न कर रहा है - यानी मनुष्य का दृष्टिकोण, उसकी मानसिकता, उसकी चेतना और उसका आत्म-बोध (या आत्म-विस्मृति)। असली तथ्य यह है कि मनुष्य असीम शक्तियों का भंडार है, पर वह खुद को शरीर मानकर भटक गया है। जब तक हम इस मूल 'तथ्य' को समझकर अपने दृष्टिकोण को नहीं बदलेंगे, तब तक बाहरी 'दृश्यों' या समस्याओं का स्थायी समाधान संभव नहीं है।

अध्याय 4: इन विभीषिकाओं से कौन जूझेगा? कैसे जूझेगा?

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: वातावरण में जहर कैसे घुल रहा है?

उत्तर: औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले धुएँ से वायु विषैली हो रही है और उनके रसायन जलाशयों में बहाए जाने से पानी जहरीला हो रहा है।

2. प्रश्न: वृक्षों की कटाई से कौन-कौन से खतरे बढ़ रहे हैं?

उत्तर: वृक्षों की कटाई से धरती के रेगिस्तान बनने, बाढ़ आने, वर्षा कम होने और भूमि की उर्वरता खत्म होने जैसे खतरे बढ़ रहे हैं।

3. प्रश्न: धरती का संतुलन किन तीन चीजों पर निर्भर है?

उत्तर: धरती का संतुलन पशुओं, वृक्षों और मनुष्यों के परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध पर निर्भर है।

4. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि को सभी समस्याओं का एक प्रमुख कारण क्यों बताया गया है?

उत्तर: क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के लिए अधिक आहार, जल, मकान, कारखाने आदि साधनों की आवश्यकता पड़ती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है और अन्य समस्याएँ जन्म लेती हैं।

5. प्रश्न: लेखक ने युद्ध को एक "नया व्यवसाय" क्यों कहा है?

उत्तर: क्योंकि बीसवीं सदी में अनेक युद्ध हुए हैं और आज भी ध्वंस की तैयारियाँ सृजन के प्रयासों से कहीं अधिक हैं, जिसमें भारी मात्रा में धन, जन और बुद्धि शक्ति खर्च हो रही है।

6. प्रश्न: अर्थ संतुलन बिगड़ने का क्या परिणाम हो रहा है?

उत्तर: अर्थ संतुलन बिगड़ने से गरीब और अधिक गरीब तथा अमीर और अधिक अमीर होते जा रहे हैं।

7. प्रश्न: लेखक के अनुसार, प्रजातंत्र में मतदाता विवेकपूर्ण निर्णय क्यों नहीं कर पा रहा है?

उत्तर: क्योंकि मतदाता विभ्रमों (भ्रम) और दबावों के बीच जी रहा है, जिससे उसके लिए विवेकपूर्ण निर्णय कर सकने का धरातल ही समाप्त हो गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न आयाम क्या हैं और उनके दूरगामी परिणाम क्या हो सकते हैं?

उत्तर: पर्यावरण प्रदूषण के कई आयाम हैं:

- वायु प्रदूषण: कारखानों के कारण वायु विषैली हो रही है, जिससे तापमान बढ़ रहा है (ग्लोबल वार्मिंग) और पृथ्वी का सुरक्षा कवच (ओजोन परत) फट रहा है।
- जल प्रदूषण: औद्योगिक रसायन पानी को जहरीला बना रहे हैं, जो पीने के काम आता है।
- भूमि प्रदूषण: रासायनिक खादें और कीटनाशक आहार को विषाक्त कर रहे हैं।
- वन विनाश: पेड़ों के कटने से बाढ़, सूखा और भूमि का क्षरण हो रहा है। इनके दूरगामी परिणाम भयावह हो सकते हैं, जैसे - हिम भंडारों का पिघलना, समुद्र में बाढ़, अंतरिक्षीय किरणों से खतरा, और जीवन के लिए आवश्यक हवा-पानी का अभाव।

2. प्रश्न: लेखक ने प्रत्यक्षवाद को आदर्शों के पतन के लिए कैसे जिम्मेदार ठहराया है?

उत्तर: लेखक का मानना है कि प्रत्यक्षवाद (जो दिखता है, वही सत्य है) ने लोगों की आस्था आदर्शों से डिगा दी है। अब लोगों का मुख्य दृष्टिकोण जैसे-तैसे अपना स्वार्थ साधना रह गया है। मानवीय गरिमा और उत्कृष्टता की बातें केवल कहने-सुनने तक सीमित रह गई हैं, जबकि व्यवहार में छल, पाखंड और प्रपंच बढ़ गया है।

3. प्रश्न: इस अध्याय में वर्णित समस्याओं का एक-दूसरे से क्या संबंध है? एक उदाहरण देकर समझाएँ।

उत्तर: इस अध्याय में वर्णित सभी समस्याएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। उदाहरण के लिए, जनसंख्या वृद्धि (समस्या 1) के कारण अधिक भोजन और आवास की आवश्यकता होती है। इसके लिए अधिक उद्योग (समस्या 2) लगाए जाते हैं और वनों की कटाई (समस्या 3) होती है। इससे पर्यावरण प्रदूषण (समस्या 4) बढ़ता है, जो लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य (समस्या 5) को बिगाड़ता है। यह चक्र दिखाता है कि ये सभी विभीषिकाएँ एक-दूसरे को जन्म देती हैं और बढ़ाती हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: "इन विभीषिकाओं से कौन जूझेगा? कैसे जूझेगा?" - अध्याय के इस शीर्षक वाले प्रश्न का उत्तर अध्याय के अंत में किस निराशाजनक स्थिति पर आकर रुक जाता है?

उत्तर: यह प्रश्न पूछने के बाद लेखक एक-एक कर सभी क्षेत्रों की भयावह तस्वीर खींचते हैं - पर्यावरण, संसाधन, जनसंख्या, युद्ध, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा और राजनीति। अंत में वे धर्म के क्षेत्र को देखते हैं, जो कभी समाज का मेरुदंड था, पर अब वहाँ भी पाखंड और स्वार्थ हावी है। सभी तरफ निराशाजनक स्थिति देखकर, हर सोचने वाले का मन यह सोचकर टूट जाता है कि इन समस्याओं का समाधान कौन और कैसे करेगा। अध्याय इस प्रश्न का कोई सीधा उत्तर नहीं देता, बल्कि पाठक को इस गहरी निराशा और असमंजस की स्थिति में छोड़ देता है, ताकि वह समस्या की गंभीरता को पूरी तरह महसूस कर सके।

2. प्रश्न: लेखक यह क्यों संकेत देते हैं कि सरकारी और राजनीतिक प्रणालियाँ इन समस्याओं का समाधान करने में विफल रही हैं?

उत्तर: लेखक कई कारणों से यह संकेत देते हैं:

- **शिक्षा:** शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना रह गया है, जो बेकारी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है।
- **नौकरशाही:** जनता की भलाई के लिए आवंटित धन का बड़ा हिस्सा (85%) नौकरशाही तंत्र पर ही खर्च हो जाता है और बचा हुआ भी जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता।
- **प्रजातंत्र:** कहने को प्रजातंत्र है, पर मतदाता भ्रमित है और सही निर्णय लेने में असमर्थ है, जिससे शासन प्रणाली पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है।
- **आदर्शों का पतन:** हर तरफ स्वार्थ हावी है, जिससे कोई भी प्रणाली प्रभावी ढंग से काम नहीं कर पा रही है। इन तर्कों से लेखक यह स्थापित करते हैं कि मौजूदा ढाँचे इन गहरी और व्यापक समस्याओं को सुलझाने में पूरी तरह अक्षम हैं।

अध्याय 5: कठिन समस्याओं के सरल समाधान

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वैभव या सम्पदा उत्पन्न करने के लिए सबसे आवश्यक क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, वैभव उत्पादन के लिए मानवीय चेतना का स्वस्थ और समुन्नत होना सबसे आवश्यक है।

2. प्रश्न: लेखक ने व्यक्तिगत स्वस्थता, प्रतिभा और दूरदर्शिता को साधनों या परिस्थितियों से अधिक महत्वपूर्ण क्यों माना है?

उत्तर: क्योंकि यदि व्यक्ति स्वस्थ, प्रतिभाशाली और दूरदर्शी हो, तो वह गरीबी में भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी सकता है और प्रगति के साधन कहीं न कहीं से जुटा लेता है।

3. प्रश्न: प्राचीनकाल में लोग प्रदूषण और शहरों की भीड़ जैसी समस्याओं से कैसे बचे रहते थे?

उत्तर: प्राचीनकाल की सुसंस्कृत पीढ़ी औसत नागरिक स्तर का जीवन अपनाकर गाँवों में रहती थी और हाथों से किए जाने वाले श्रम से अपनी जरूरतें पूरी कर लेती थी, जिससे न प्रदूषण फैलता था और न ही गाँवों से शहरों की ओर प्रतिभा का पलायन होता था।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "सादा जीवन—उच्च विचार" का सिद्धांत अपनाने से क्या होगा?

उत्तर: इस सिद्धांत को अपनाते ही आज की असंख्य समस्याओं में से एक भी नहीं टिक सकेगी और छाया हुआ अन्धकार मिटता चला जाएगा।

5. प्रश्न: इस संसार में हर व्यक्ति की बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त साधन हैं या नहीं?

उत्तर: हाँ, इस संसार में इतने साधन मौजूद हैं कि हर शरीर को रोटी, हर तन को कपड़ा, हर सिर को छाया और हर हाथ को काम मिल सके।

6. प्रश्न: यदि युद्धों में खर्च होने वाली संपत्ति और प्रतिभा को नवसृजन में लगाया जाए तो क्या हो सकता है?

उत्तर: यदि ऐसा किया जाए, तो इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की सभी कल्पनाएँ दस वर्ष के भीतर साकार हो सकती हैं।

7. प्रश्न: वर्तमान शासन तंत्र की सबसे बड़ी समस्या क्या बताई गई है?

उत्तर: वर्तमान शासन तंत्र की समस्या यह है कि यह खर्चीली और कर्तव्य से विमुख नौकरशाही पर आधारित है, जिसमें कर्मचारी मालिकों के भी मालिक बन गए हैं, जिससे जन कल्याण की आशा बहुत कम रह जाती है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक क्यों मानते हैं कि समस्याओं का अलग-अलग समाधान खोजना व्यर्थ है? उन्होंने 'रानी मक्खी' का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक मानते हैं कि अलग-अलग समस्याओं (जैसे- बीमारी, अपराध, गरीबी) का समाधान खोजना व्यर्थ है क्योंकि ये सभी एक ही मूल कारण से पैदा होती हैं। उन्होंने 'रानी मक्खी' का उदाहरण यह समझाने के लिए दिया है कि जैसे छत्ते की सभी समस्याओं का कारण लगातार अंडे देने वाली रानी मक्खी है, उसी तरह समाज की सभी समस्याओं का मूल कारण मनुष्य का अचिंत्य-चिन्तन (गलत सोच) और दुर्व्यसन (बुरी आदतें) हैं। जब तक इस मूल कारण को नहीं हटाया जाएगा, तब तक बाहरी उपचारों से कोई स्थायी हल नहीं निकलेगा।

2. प्रश्न: विकेंद्रीकृत शासन और सहकारिता को एक आदर्श व्यवस्था क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे आदर्श व्यवस्था इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें सत्ता किसी एक केंद्र में न होकर स्थानीय स्तर पर बँटी होती है और लोग सेवा भावना से मिलकर काम करते हैं। यह खर्चीली और कर्तव्यविमुख नौकरशाही का विकल्प है, जहाँ जनता का पैसा तंत्र पर ही खर्च हो जाता है। सहकारिता पर आधारित व्यवस्था से ही

भौतिक और आत्मिक प्रगति का समग्र उद्देश्य पूरा हो सकता है।

3. प्रश्न: "महत्त्व साधनों या परिस्थितियों का नहीं, व्यक्तिगत स्वस्थता, प्रतिभा और दूरदर्शिता का है।" - इस कथन से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि समस्याओं का असली समाधान बाहर नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर है। यदि मनुष्य का मस्तिष्क विकृत और हृदय निष्ठुर हो, तो बाहरी धन-दौलत या सुविधाएँ व्यर्थ हैं। इसके विपरीत, यदि व्यक्ति का आंतरिक स्वास्थ्य (शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक) अच्छा है, तो वह अभावों और बाधाओं के बावजूद भी अपना रास्ता बना लेता है। इसलिए, समाज को बदलने के लिए व्यक्ति के आंतरिक गुणों को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, आज की सभी जटिल समस्याओं का 'सरल समाधान' क्या है और उसे व्यवहार में कैसे लाया जा सकता है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, सभी जटिल समस्याओं का एक ही 'सरल समाधान' है - मानवीय चेतना का सुधार। इसे व्यवहार में लाने के लिए दो प्रमुख सिद्धांतों को अपनाना होगा:

1. "सादा जीवन—उच्च विचार": औसत नागरिक स्तर का जीवन अपनाना, जिससे फिजूलखर्ची, विषमता और प्रदूषण जैसी समस्याएँ खत्म हो जाएँ।

2. ईमानदारी, समझदारी और बहादुरी: हर व्यक्ति द्वारा इन गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारना, जिससे अपराध, अन्याय और शोषण समाप्त हो जाएँ। यह समाधान सरल इसलिए है क्योंकि इसकी शुरुआत किसी बाहरी तंत्र से नहीं, बल्कि व्यक्ति के अपने जीवन-दर्शन में एक छोटे से बदलाव से होती है।

2. प्रश्न: लेखक ने भूमि के ऊसर होने और उपजाऊ होने की तुलना मानवीय चेतना से क्यों की है? इस तुलना के माध्यम से वे क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना यह समझाने के लिए की है कि जैसे ऊसर भूमि पर कुछ भी उगाया नहीं जा सकता, उसी प्रकार विकृत मस्तिष्क और निष्ठुर हृदय वाले लोगों से किसी भी प्रकार के नवसृजन या समाधान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। जैसे खेती के लिए भूमि का उपजाऊ होना पहली शर्त है, वैसे ही समाज की उन्नति और समस्याओं के समाधान के लिए मानवीय चेतना का स्वस्थ और सकारात्मक होना पहली और अनिवार्य शर्त है। योजना बनाने वाले या साधनों पर अधिकार रखने वाले लोग यदि खुद विकृत मानसिकता के होंगे, तो वे समाधान की जगह विनाश ही करेंगे।

अध्याय 6: नवसृजन की चेतना असमर्थ नहीं है

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: व्यापक समस्याओं से निपटने के लिए किस तरह के प्रयासों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: व्यापक विपन्नताओं से निपटने के लिए छोटे-मोटे नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर व्यापक तैयारियों की आवश्यकता होती है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, तथाकथित बुद्धिमान लोग संसार को क्या समझते हैं और उनकी भूल क्या है?

उत्तर: वे संसार को मात्र पदार्थों से सजी दुकान समझते हैं और उनकी भूल यह है कि वे सोचते हैं कि चीजों को इधर-उधर कर देने से समस्याएँ हल हो जाएँगी, जबकि वे मूल कारण (मनुष्य की सोच) पर ध्यान नहीं देते।

3. प्रश्न: लेखक ने रक्त कैंसर का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: यह समझाने के लिए कि जैसे पूरे रक्त में फैले कैंसर का इलाज केवल बाहरी मरहम-पट्टी से नहीं हो सकता, उसी प्रकार समाज में गहराई तक फैले चिंतन और चरित्र के बिगाड़ को सतही उपायों से ठीक नहीं किया जा सकता।

4. प्रश्न: युग परिवर्तन या अवतार अवतरण किसे कहा गया है?

उत्तर: जब समाज में व्यापक विपत्ति आती है, तो उससे निपटने के लिए जो महत्वपूर्ण सामूहिक परिवर्तन होते हैं, उन्हें ही पुरातन भाषा में युग परिवर्तन या अवतार अवतरण कहा जाता रहा है।

5. प्रश्न: महाक्रांतियों को केवल संघर्ष ही नहीं, बल्कि और क्या करना पड़ता है?

उत्तर: महाक्रांतियों को अनीति के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के साथ-साथ नवसृजन के लिए दूरगामी योजनाएँ भी बनानी पड़ती हैं और कदम भी उठाने पड़ते हैं।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, हमें स्रष्टा की क्षमता पर विश्वास क्यों रखना चाहिए?

उत्तर: क्योंकि जो प्रकृति आए दिन विशाल ग्रह-पिंड बनाने और मिटाने का खेल करती है, उसके लिए समाज की गंदगी को तूफानी आँधी और वर्षा की तरह साफ कर देना कोई बड़ी बात नहीं है।

7. प्रश्न: मृत्यु और सृजन के बीच संतुलन कैसे बना रहता है?

उत्तर: मृत्यु हर क्षण असंख्य प्राणियों को नष्ट करती है, लेकिन सृजन का देवता हमेशा मरने वालों की तुलना में जन्म लेने वालों की संख्या अधिक रखता है, जिससे प्राणियों की वंश वृद्धि होती रहती है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि समस्याओं से निपटने के लिए हमें अपनी सूझबूझ विकसित करनी चाहिए, न कि दान पर निर्भर रहना चाहिए?

उत्तर: लेखक का मानना है कि कोई दानवीर एक-दो दिन किसी को भोजन करा सकता है, लेकिन हर दिन की

समस्याओं से हर व्यक्ति को खुद ही निपटना पड़ता है। इसलिए, बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के बजाय हमें अपनी आंतरिक क्षमता, यानी अपनी सूझबूझ को इतना विकसित करना चाहिए कि हम अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें, ठीक वैसे ही जैसे हम रोज अपने आँगन का कूड़ा खुद साफ करते हैं।

2. प्रश्न: "पगलाए हुए व्यक्ति द्वारा की गई तोड़-फोड़ की मरम्मत तो होनी चाहिए, पर साथ ही उस उन्माद की रोकथाम भी होनी चाहिए।" इस कथन का सामाजिक संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का सामाजिक संदर्भ में अर्थ है कि समाज में फैली समस्याओं (तोड़-फोड़) का समाधान तो करना ही चाहिए, लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। हमें उन समस्याओं के मूल कारण, यानी **मनुष्य के विकृत चिंतन और व्यवहार (उन्माद)** को भी ठीक करना होगा। यदि मूल कारण बना रहा, तो वह भविष्य में भी वैसी ही समस्याएँ पैदा करता रहेगा। इसलिए, स्थायी समाधान के लिए सतही सुधार के साथ-साथ वैचारिक क्रांति भी आवश्यक है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, निराश होने की आवश्यकता क्यों नहीं है, भले ही वर्तमान परिस्थितियाँ कितनी भी खराब क्यों न हों?

उत्तर: लेखक कई कारण बताते हैं:

- **प्रकृति की शक्ति:** सृष्टि का संतुलन बनाने वाली दैवीय सत्ताएँ निष्क्रिय नहीं हैं और वे इस सुंदर संसार को नष्ट नहीं होने देंगी।

- **सृजन की प्रबलता:** मृत्यु से सृजन हमेशा अधिक शक्तिशाली रहा है, इसलिए विनाश पर अंततः सृजन की ही विजय होगी।

- **मानवता का इतिहास:** मनुष्यता ने इतिहास में कई बार आश्चर्यजनक करवटें ली हैं और देवमानवों की नई पीढ़ी ने आकर समाज को सुधारा है। लेखक को विश्वास है कि अगले ही दिनों ऐसी ही एक नई पीढ़ी उभरेगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय के शीर्षक "नवसृजन की चेतना असमर्थ नहीं है" का क्या तात्पर्य है? यह चेतना कहाँ से आएगी और कैसे काम करेगी?

उत्तर: इस शीर्षक का तात्पर्य है कि भले ही आज की समस्याएँ बहुत विशाल और विकराल दिख रही हैं, लेकिन उन्हें हल करने और एक नए युग का निर्माण करने वाली शक्ति (चेतना) कमजोर या असमर्थ नहीं है।

- **यह कहाँ से आएगी?** यह चेतना किसी एक व्यक्ति से नहीं, बल्कि एक अदृश्य तूफानी प्रवाह के रूप में उभरेगी। यह स्रष्टा या प्रकृति की शक्ति है, जो निराशा के क्षणों में अरुणोदय की तरह प्रकट होती है।

- **यह कैसे काम करेगी?** यह एक महाक्रांति के रूप में काम करेगी, जिसके दो पक्ष होंगे - **अनीति के विरुद्ध**

संघर्ष और नवसृजन के लिए दूरगामी योजना। यह लोगों के चिंतन को बदलेगी और उन्हें सामूहिक रूप से व्यापक विपत्तियों से निपटने के लिए प्रेरित करेगी।

2. प्रश्न: लेखक ने भगीरथ के गंगा लाने के प्रयास का उल्लेख क्यों किया है? यह आज के संदर्भ में किस प्रकार की कार्रवाई का प्रतीक है?

उत्तर: भगीरथ के प्रयास का उल्लेख यह दर्शाने के लिए किया गया है कि व्यापक और स्थायी समस्याओं का समाधान भी उतना ही विशाल और दूरगामी होना चाहिए। जैसे भगीरथ ने छोटे-मोटे तालाब खोदने के बजाय हिमालय में कैद विशाल जलराशि को गंगा के रूप में मैदानों तक पहुँचाकर एक बड़े क्षेत्र का स्थायी समाधान किया, उसी प्रकार आज की वैश्विक समस्याओं (जैसे- वैचारिक प्रदूषण, नैतिक पतन) का समाधान छोटे-छोटे सामाजिक सुधारों से नहीं होगा। इसके लिए हमें समस्या के मूल स्रोत, यानी मनुष्य के सामूहिक चिंतन को बदलना होगा और एक ऐसी वैचारिक क्रांति लानी होगी जो गंगा की धारा की तरह जन-जन तक पहुँचे और समाज की वैचारिक भूमि को फिर से उपजाऊ बना दे।

अध्याय 7: देवमानवों का अवतरण

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वर्तमान युग परिवर्तन किसकी योजना है?

उत्तर: यह किसी व्यक्ति विशेष की योजना नहीं है, बल्कि इसके पीछे महाकाल का दुर्धर्ष संकल्प काम कर रहा है।

2. प्रश्न: लेखक ने समय की चुनौती स्वीकार करने वालों की तुलना किनसे की है?

उत्तर: उनकी तुलना अंगद, हनुमान, नल और नील जैसे पराक्रमियों से की है।

3. प्रश्न: जटायु और गिलहरी के उदाहरणों से क्या संदेश मिलता है?

उत्तर: इन उदाहरणों से संदेश मिलता है कि जब दैवी आवेश या प्रेरणा आती है, तो एक कमजोर और जीर्ण-शीर्ण प्राणी भी महायोद्धा से भिड़ जाता है और एक छोटी सी गिलहरी भी श्रद्धापूर्वक अपना योगदान देने लगती है।

4. प्रश्न: महाकाल की अदृश्य अग्नि शिखा हर जीवन्त व्यक्ति से क्या करवाएगी?

उत्तर: वह हर जीवन्त व्यक्ति से समय की पुकार सुनकर कुछ महत्वपूर्ण पुरुषार्थ कराए बिना नहीं छोड़ेगी।

5. प्रश्न: अपने युग का अवतार लोगों को कौन से दो संदेश सुनाएगा?

उत्तर: वह दो संदेश सुनाएगा - पहला, आत्मपरिष्कार (स्वयं का सुधार) और दूसरा, सत्प्रवृत्तियों का सम्बर्धन (अच्छी प्रवृत्तियों को बढ़ाना)।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, धरती पर स्वर्ग उतारने के लिए क्या नवगठन आवश्यक है?

उत्तर: इसके लिए तीन चीजें आवश्यक हैं - विचार परिवर्तन, करुणा से भरी भावसम्बेदना, और व्यक्तियों में संयम तथा आदर्शवादी पराक्रम।

7. प्रश्न: देवमानव अपनी किस पिछली भूल को सुधारने का निश्चय करेंगे?

उत्तर: वे अपनी इस भूल को सुधारेंगे कि उन्होंने ज्ञान, कर्म और भक्ति की साधना तो की, पर अपनी शक्ति को संगठित करना भूल गए। अब वे अपनी संगठित शक्ति का जागरण करेंगे।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: "असंभव का संभव होना" से लेखक का क्या तात्पर्य है? उन्होंने इसके लिए कौन-कौन से उदाहरण दिए हैं?

उत्तर: "असंभव का संभव होना" से लेखक का तात्पर्य उन चमत्कारों से है जो प्रकृति में निरंतर होते रहते हैं और हमें विश्वास दिलाते हैं कि बड़े से बड़ा परिवर्तन भी संभव है। इसके लिए उन्होंने तीन उदाहरण दिए हैं:

1. घने अंधकार वाली रात का सुबह के प्रकाश में बदल जाना।
2. आँख से न दिखने वाले एक छोटे से शुक्राणु का एक पराक्रमी प्रौढ़ मनुष्य बन जाना।
3. भगवान का क्षण-क्षण में करोड़ों विचित्र प्राणी उत्पन्न करना, जबकि मनुष्य एक चींटी भी नहीं बना सकता।

2. प्रश्न: लेखक ने आने वाले देव-समुदाय को "देखने में भले ही रीछ-वानरों जैसा" क्यों कहा है?

उत्तर: यह कहकर लेखक यह बताना चाहते हैं कि जो लोग इस महान परिवर्तन को लाएंगे, वे बाहरी रूप से या सामाजिक स्तर पर साधारण मनुष्य ही दिखेंगे, कोई विशेष या अलौकिक प्राणी नहीं। जैसे राम की सेना में रीछ-वानर थे जो दिखने में साधारण थे पर उनका पुरुषार्थ असाधारण था, उसी प्रकार ये 'देवमानव' भी सामान्य लोगों के बीच से ही निकलेंगे, लेकिन उनका संकल्प और कार्य असम्भव को सम्भव बनाने जैसा होगा।

3. प्रश्न: "उसकी परिवर्तन-प्रक्रिया अपने आप से आरम्भ होगी"। इस पंक्ति की व्याख्या करें।

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि समाज को बदलने की शुरुआत कहीं बाहर से नहीं, बल्कि व्यक्ति के अपने भीतर से होगी। हर वह व्यक्ति जिसमें मनुष्यता जीवित होगी, वह सबसे पहले अपने विचारों और आचरण को बदलेगा (आत्मपरिष्कार)। यह बदलाव फिर उसके परिवार और आसपास के लोगों (परिकर) को प्रभावित करेगा और अंततः यह लहर पूरे समाज में फैल जाएगी। यह एक स्व-प्रेरित और आंतरिक क्रांति होगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार 'अवतरण' की प्रक्रिया क्या है? यह पारंपरिक अवतार की धारणा से किस प्रकार भिन्न या समान है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, 'अवतरण' किसी एक व्यक्ति या ईश्वर के शरीर धारण करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक चेतना का जागरण है।

◦ समानता: पारंपरिक धारणा की तरह यह भी ईश्वर या महाकाल की प्रेरणा से होता है और इसका उद्देश्य अधर्म का नाश कर धर्म (सद्प्रवृत्तियाँ) की स्थापना करना है।

◦ भिन्नता: यह किसी एक 'अवतार' के रूप में नहीं, बल्कि असंख्य 'देवमानवों' के समुदाय के रूप में होगा। यह अवतरण एक शक्तिशाली विचार (युग चेतना) का होगा जो हर संवेदनशील मनुष्य के अंतःकरण को झकझोरेगा और उसे सक्रिय करेगा। इसका माध्यम कोई एक व्यक्ति नहीं, बल्कि संगठित देवमानवों की संयुक्त शक्ति होगी, जो समाज में बदलाव लाएगी।

2. प्रश्न: "ध्वंस और सृजन की यह दुहरी प्रक्रिया" से लेखक का क्या अभिप्राय है? यह प्रक्रिया समाज को 'समतल' कैसे करेगी?

उत्तर: "ध्वंस और सृजन की दुहरी प्रक्रिया" से लेखक का अभिप्राय एक साथ होने वाले दो कार्यों से है:

1. ध्वंस: समाज में व्याप्त अवाँछनीयताओं, गलत मान्यताओं, कुसंस्कारों और अन्यायी व्यवस्थाओं (जिन्हें 'निरर्थक टीलों' की संज्ञा दी गई है) का विनाश करना।

2. सृजन: समाज में व्याप्त अभाव, असमानता और निराशा (जिन्हें 'भयंकर खड्डों' कहा गया है) को पाटकर सत्प्रवृत्तियों, सहयोग, समानता और आदर्शों की स्थापना करना। यह प्रक्रिया समाज को 'समतल' इस प्रकार करेगी कि यह समाज की ऊँच-नीच (अमीरी-गरीबी, शोषण-उत्पीड़न) को खत्म कर देगी। 'टीलों' (अहंकार, संग्रह) को गिराकर और 'खड्डों' (दीनता, अभाव) को भरकर यह एक ऐसा समतावादी और न्यायपूर्ण धरातल तैयार करेगी, जिस पर नंदनवन जैसे सुखी और समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सके।

अध्याय 8: विद्या बनाम शिक्षा

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, जीवन में प्राथमिकता देने योग्य सबसे महत्वपूर्ण तत्व क्या है?

उत्तर: जीवन में प्राथमिकता देने योग्य सबसे महत्वपूर्ण तत्व है साँस का चलना, यानी प्राण का बचे रहना।

2. प्रश्न: आज की समस्याओं का मूल कारण क्या है?

उत्तर: सभी समस्याओं का मूल कारण मानवी चेतना का भ्रम और मोह में ग्रस्त हो जाना है।

3. प्रश्न: विद्या और शिक्षा में क्या मुख्य अंतर है?

उत्तर: शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक पैसा कमाने की दक्षता बढ़ाना है, जबकि विद्या व्यक्तित्व को उभारती है, प्रतिभा जगाती है और दृष्टिकोण को उत्कृष्ट बनाती है।

4. प्रश्न: कहानी में राजकुमारी और नौकरानी कौन थीं और नौकरानी ने क्या षड्यंत्र किया?

उत्तर: कहानी में विद्या राजकुमारी थी और शिक्षा नौकरानी। नौकरानी (शिक्षा) ने राजकुमारी (विद्या) के कपड़े पहनकर उसका स्थान ले लिया और यह अफवाह फैला दी कि असली राजकुमारी डूबकर मर गई है।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, इस सुन्दर संसार के दीन-हीन और अपराधी प्रवृत्ति का बन जाने का मूलभूत कारण क्या है?

उत्तर: इसका मूलभूत कारण यह है कि लोगों ने विद्या (संजीवनी विद्या) का महत्त्व भुला दिया है और उसे उपेक्षित कर दिया है।

6. प्रश्न: महापरिवर्तन का स्वरूप क्या होगा?

उत्तर: महापरिवर्तन का स्वरूप यह होगा कि विद्या को फिर से जीवित और जाग्रत किया जाएगा और उसके प्रचार-प्रसार का प्रचंड प्रयास होगा।

7. प्रश्न: प्राचीनकाल में शिक्षा और आजीविका में क्या संबंध था?

उत्तर: प्राचीनकाल में शिक्षा और आजीविका का कोई सीधा संबंध नहीं था। पढ़ाई जानकारी बढ़ाने के लिए होती थी और कमाई के लिए लोग कृषि, पशुपालन या कुटीर उद्योग जैसे कौशल सीखते थे।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि यदि मानसिक संतुलन बिठाया जा सके तो विनाश को विकास में बदला जा सकता है?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि मनुष्य के पास आज भी पर्याप्त समझ, सम्पदा और दक्षता मौजूद है। समस्या साधनों की कमी की नहीं, बल्कि सोच के गलत होने की है। यदि मनुष्य संकीर्ण स्वार्थपरता को सीमित कर ले, उदारता अपनाए और दूरदर्शी विवेक से काम ले, तो वह अपने मौजूदा संसाधनों का सही उपयोग करके विनाशकारी प्रवृत्तियों को विकास कार्यों में बदल सकता है।

2. प्रश्न: विद्या और शिक्षा की कहानी आज के समाज की किस सच्चाई को दर्शाती है?

उत्तर: यह कहानी आज के समाज की इस कड़वी सच्चाई को दर्शाती है कि समाज ने विद्या (नैतिक और चारित्रिक विकास) को पूरी तरह से भुलाकर उसका स्थान शिक्षा (केवल भौतिक सफलता और धन कमाने की कला) को दे दिया है। जैसे नौकरानी ने राजकुमारी का स्थान ले लिया, वैसे ही सतही शिक्षा ने गहरी विद्या को अपदस्थ कर दिया है। इसी मूलभूत भूल के कारण आज समाज में ज्ञान तो है, पर विवेक नहीं; डिग्रियाँ हैं, पर चरित्र नहीं। यही कारण है कि संसार में अपराध और अशांति व्याप्त है।

3. प्रश्न: नवयुग की स्थापना के दो आधार क्या होंगे और वे कैसे काम करेंगे?

उत्तर: नवयुग की स्थापना के दो आधार होंगे - विवेक और औचित्य।

◦ **विवेक:** यह दूरदर्शी समझ है जो तात्कालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक कल्याण को देखती है। यह मनुष्य को सही और गलत में भेद करना सिखाएगा।

◦ **औचित्य:** यह सही और न्यायपूर्ण व्यवहार है। विवेक के प्रकाश में व्यक्ति यह समझेगा कि क्या करना उचित है और फिर उसी के अनुसार आचरण करेगा। आने वाला प्रज्ञा का युग हर किसी के मस्तिष्क में यह विवेकशीलता और औचित्य की भावना भरेगा, जिससे लोग अपनी पुरानी गलत मान्यताओं को छोड़कर केवल सही को ही स्वीकार करेंगे और इसी से नए युग का निर्माण होगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: "व्यक्तित्वों में देवत्व का अनुपात बढ़ेगा"। इस कथन का क्या अर्थ है और यह कैसे संभव होगा?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि मनुष्य के चरित्र और व्यवहार में दैवीय गुणों (जैसे- उदारता, करुणा, सहयोग, दूरदर्शिता, निस्वार्थता) की मात्रा बढ़ेगी और पाशविक गुणों (जैसे- संकीर्ण स्वार्थ, क्रूरता, लालच) की मात्रा घटेगी। यह विद्या के पुनर्जागरण से संभव होगा। जब शिक्षा के स्थान पर विद्या को प्राथमिकता दी जाएगी, तो लोगों का ध्यान केवल भौतिक कमाई से हटकर आंतरिक और चारित्रिक विकास पर केंद्रित होगा। विद्या मनुष्य के अंतःकरण को आत्मीयता और उदारता से भर देगी, जिससे उसके व्यक्तित्व में देवत्व का उदय स्वाभाविक रूप से होने लगेगा। यही देवत्व समाज में सतयुगी सुख-शांति का सृजन करेगा।

2. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था की कौन सी विशेषताएँ थीं जिन्हें आज फिर से अपनाने की आवश्यकता है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं जिन्हें आज अपनाने की आवश्यकता है:

1. **विद्या को प्राथमिकता:** शिक्षा (साक्षरता) के साथ-साथ संजीवनी विद्या (चरित्र निर्माण) पर सबसे अधिक जोर दिया जाता था, जिसका दायित्व ऋषि उठाते थे। आज हमें फिर से चरित्र निर्माण को शिक्षा का केंद्र बनाना होगा।

2. **शिक्षा और आजीविका का अलगाव:** पढ़ाई केवल जानकारी के लिए होती थी, न कि नौकरी पाने के लिए। आजीविका के लिए व्यावहारिक कौशल सिखाए जाते थे। इससे 'शिक्षित बेरोजगारी' जैसी समस्या नहीं होती थी और हर व्यक्ति स्वावलंबी बनता था। इस मॉडल को आज अपनाने से शिक्षा पर से नौकरी का दबाव कम होगा।

3. **विकेंद्रीकृत और सुलभ व्यवस्था:** साक्षरता की शिक्षा गाँव के देवालयों में श्रद्धापूर्ण वातावरण में दी

जाती थी, जो सभी के लिए सुलभ थी। इसे अपनाकर शिक्षा को सस्ता और सर्वसुलभ बनाया जा सकता है। इन व्यवस्थाओं को पुनः स्थापित करके हम विद्या और शिक्षा के बीच का संतुलन साध सकते हैं।

पुस्तक में परिभाषित शब्द और शब्द समुच्चय:

- **समानता** - यह प्रकारान्तर से शालीनता का ही एक लक्षण है।
- **न्याय** - जमा भले ही किसी ने किया हो, उसका उपयोग वहीं होना चाहिए, जहाँ उसकी नितान्त आवश्यकता है।
- **विद्या (ज्ञान चक्षु)** - यह वह है जिसके अभाव में मनुष्य अन्धों के समतुल्य माना जाता है। यह सर्वोपरि धन है और इससे अमृत की प्राप्ति होती है। इसकी विशेषताएँ तब उत्पन्न होती हैं, जब इसके द्वारा मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव और व्यक्तित्व का विकास हो तथा प्रतिभा को समुन्नत-सुसंस्कृत बनाने में सहायता मिले।
- **ब्रह्म-राक्षस** - वह मनुष्य जो विद्या द्वारा गुण, कर्म, स्वभाव का विकास करने के बजाय भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण अपनाता है, जिससे वह और भी अधिक खतरनाक हो जाता है।
- **प्राचीनकाल में शिक्षा** - वह विधा जो निर्वाह साधनों को जुटाने और उनका सही प्रयोग कर सकने की विधि समझाकर अपना प्रयोजन पूरा करती थी।
- **जागरूकता / विचारशीलता / विवेकनिष्ठा** - यह प्रकृति सम्पदा और चेतना के क्षेत्र में प्राणियों तथा मनुष्य की रीति नीति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन उत्पन्न करती है।
- **नरपशु / वनमानुष** - आत्म विस्मृति का लांछन जिसके रहते मनुष्य, मनुष्यता, सभ्यता एवं सुसंस्कारिता से रहित हो जाता है।
- **मनुष्यता** - यह सभ्यता एवं सुसंस्कारिता से आरम्भ होती है। यही अपने स्तर के गुण, कर्म, स्वभाव के सम्बन्ध में बरती जाने वाली जागरूकता है।
- **शिक्षा (लोक व्यवहार के संदर्भ में)** - इसे लोक व्यवहार का, उपार्जन प्रक्रिया का, सुविधा संग्रह का एक प्रयोजन भर माना जा सकता है।
- **मनुष्य** - यह सृष्टि का सर्व समर्थ प्राणी है। इसे 'भटका हुआ देवता' भी कहा गया है, जिसके अन्तराल में दैवी शक्तियों का निवास है, पर दृश्य जगत् में स्वयं को भूल गया है।
- **स्वर्ग और नरक** - यह दोनों ही मात्र अनुभूतियाँ हैं, जिनको हर व्यक्ति इच्छानुसार अपने लिए विनिर्मित करता एवं बदलता रहता है।
- **उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए आवश्यक कार्य** - दृष्टिकोण का परिवर्तन।
- **एक नया व्यवसाय (बीसवीं सदी में)** - युद्ध।
- **युग परिवर्तन / अवतार अवतरण** - व्यापक विपत्ति से निपटने के लिए होने वाले महत्त्वपूर्ण सामूहिक परिवर्तन को पुरातन भाषा में इन नामों से पुकारा जाता रहा है।
- **महाक्रान्ति** - ऐसे तूफानी परिवर्तन जो प्रतिकूलताओं से निपटने के लिए संघर्ष के साथ-साथ नवसृजन के

लिए दूरगामी योजनाएँ भी बनाते हैं और कदम उठाते हैं।

- असम्भव का सम्भव होना - घने अंधकार वाली रात का सुबह के प्रकाश में बदल जाना।
- आत्मपरिष्कार - अपने युग के अवतार द्वारा दिए जाने वाले दो संदेशों में से पहला (स्वयं का सुधार)।
- सत्प्रवृत्तियों का सम्बर्धन - अपने युग के अवतार द्वारा दिए जाने वाले दो संदेशों में से दूसरा (अच्छी प्रवृत्तियों को बढ़ाना)।
- विद्या (राजकुमारी के रूप में) - वह जो व्यक्तित्व को उभारती, प्रतिभा को जगाती, दृष्टिकोण को उत्कृष्टता से जोड़ती और अन्तःकरण को आत्मीयता एवं उदारता से लबालब भरती है।
- शिक्षा (नौकरानी के रूप में) - वह जिसका प्रमुख प्रयोजन अधिक पैसा कमा सकने की दक्षता बढ़ा लेना भर है।
- महापरिवर्तन का स्वरूप - इसका स्वरूप एक ही होगा कि विद्या को जीवित जागृत किया जाए और उसके प्रचार-विस्तार का प्रचण्ड प्रयास हो।
- नवयुग की स्थापना के दो आधार - विवेक और औचित्य।